VERBETERINGEN OP ARISTOPHANES.

(Ed. Dindorf, Poetae Scenici Graeci, 1830).

De meeste der hieronder opgegevene verbeteringen zijn althans in eenen beperkten kring reeds bekend; diegenen, die zonder naam worden opgegeven, zijn van auteurs die om verschillende redenen wenschen onbekend te blijven. Dit geschiedt, om eene zoo veel mogelijk volledige verzameling te geven van 't geen over Aristophanes meestal verspreid bekend raakt; om geenerlei plagiaat te begaan onthouden wij ons streng van het motiveren der hier voorgestelde lezingen. Wij hebben evenwel ditmaal ons werk er van gemaakt, met de lezingen van hss. en uitgaven naauwkeurig bekend te zijn, en geven dan ook hier bij iedere plaats *alle* ons bekende lezingen van onderstaande hss. en de afwijkende der opgegeven uitgaven; eveneens hebben wij zorg gedragen geene gissingen op te nemen die reeds door de bedoelde uitgaven bekend zijn; een en ander niet zoozeer, omdat wij zelven dit zoo noodzakelijk achten, als om te voldoen aan de welligt overdreven eischen van enkelen [1].

---

[1]) Vergeleken zijn de volgende uitgaven: Poetae Scenici Graeci, Ed. G. Dindorf, Ed. secunda; Oxford, Parker, 1851, 4°. — Aristophanis Comoediae, ed. P. Invernitz, Voll. XIII; Leipz., Weidmann, 1794—1834. 8°. — A. C. rec. I. Bekker, Voll. V; London en Cambridge, 1829. 8°. — A. C. ex nova rec. G. Dindorf; Parijs, Didot, 1838. 8°. mai. — A. C. ed. Th. Bergk, Voll. II; Leipz., Teubn., 1852. 8°. — Voorts Metra Aesch., Soph., Eur. et A., descripta a G. Dindorf; Oxf. 1843. 8°. — Obss. Criticae in Auctores Vett. Gr., scr. N. I. B. Kappeyne v. d. Coppello; Nymegen, Vieweg, 1850, 8°.; en de edities die bij elk stuk worden opgegeven. De verkortingen voor de uitgaven blijken van zelf. R. is het hs. te Ravenna (een perkamenths. uit de bibliotheek te Classis bij Ravenna, uit de *tiende*

ΘΕΣΜΟΦΟΡΙΑΖΟΥΣΑΙ[2].

Vs. 38. Εὐρ. προθυσόμενος ἔοικε τῆς ποιήσεως.
Dit vs. spreekt Mnesilochos. M.

45 vlgg. Θερ. .... γλαυκόν·
Μνησ. βομβάξ.
Εὐρ. σίγα. τί λέγεις.

L. λέγει, de beide laatste woorden spreekt Mnesilochos. G. (Prof. J. Geel), het laatste geeft reeds Bergk op, hoewel twijfelend.

61 vlgg. Μνησ. συγγογγυλίσας [καὶ συστρέψας]
τουτὶ τὸ πέος χοανεῦσαι (ἕτοιμος).

L. συγγογγύλας, dan moet καὶ συστρέψας wegvallen. C. — Vgl. op Lysistr. 974 vlg., bl. 110 van dit tijdschrift, en Thesm. 56, waar γογγύλλει staat volgens Buttmann, terwijl Rbi. en Invernitz γογγυλίζει hebben; hier γογγυλίσας Ri.

96. Μνησ, καὶ ποῖός ἐστιν οὗτος;
Εὐρ. οὐκκυκλούμενος.

οὗτος οὐκκυκλούμενος worden als woorden van Euripides opgegeven bij Bergk, Didot en PS. (Poetae Scen. 1851).

L. Μνησ. καὶ ποῦ'στιν ἐτεόν;
Εὐρ. οὗτος οὐκκυκλούμενος. C.

111. Χορός. χαῖρε καλλίσταις ἀοιδαῖς.
L. καλλίστας ἀοιδάς. C.

---

eeuw, vgl. INVERNITZ I. bl. VII—XII, en het facsimile van vs. 1001—1013 uit den Vrede en 1—5 uit den Plutos tegenover bl. 598; of volgens BEKKER I. bl. V—VII uit de *elfde* eeuw, in fol.), V. dat te Venetie (Marc. 474, een perkamenths. uit de *elfde* eeuw, BEKKER t. a. p.), de letters b. i. achter deze verkortingen wijzen op de collaties van BEKKER en INVERNITZ als getuigen voor die lezing, p. achter V. op een afschrift van Prof. COBETS collatie van den Venetus. BEKKER, die 't gevoelen van INVERNITZ over den ouderdom van den Ravennas voor geheel verwerpelijk verklaart, klaagt ook in 't algemeen over die collatie, en Prof. COBET, die den Ravennas niet heeft gezien, over BEKKERS vergelijking van den Venetus.

[2]) A. Thesmophoriazusae cum scholiis, e recensione R. B. ENGER; Bonn, H. B. König, 1844. 8°. — Dit stuk staat niet in den Venetus.

126. *Χορός. τᾷ φῶς ἔσσυτο δαιμονίοις ὄμμασιν.*

Dind. de metr. bl. 374: » dactylici tetrametri" (vss. 125 en 126). » Corruptum *δαιμονίοις.*" — L. *δαίμονος*. K.

241 vlg. *Μνησ. ὕδωρ, ὕδωρ, ὦ γείτονες*
[πρὶν ἀντιλαβέσθαι τόν γε πρωκτὸν τῆς φλογός].

τόν γε wegg. Rb., *ἀ. πρωκτὸν* * * *τ*. Bergk. — Het vs. is onecht. C.

270 vlg. *Μνησ. συσσώσειν ἐμὲ*
πάσαις τέχναις ἥν [μοί] τι περιπίπτῃ κακόν.

μοι τὶ π. Inv. — L. *πάσαις τέχναισιν, ἥν τι*, dan moet *μοι* vervallen. C.

284. *Μνησ. ὦ Θρᾶττα, τὴν κίστην κάθελε, κᾆθ' ἔξελε*
τὸ πόπανον.

τὰ πόπαν' Bergk. — L. *κατάθου*. v. H. (H. van Herwerden).

292 vlg. *Μνησ. ποῦ ποῦ καθίζωμ' ἐν καλῷ, τῶν ῥητόρων*
ἵν' ἐξακούω;

καθίζω μ' ἐν Inv. Bekk., *καθέζωμαὶν* Brunck, *ἵν' ἐξακούσω* Bergk. — L. *καθέζωμ' ἐν κ*. C.

325. *Χορός. Νηρέος ἐνάλιοί τε κόραι κτέ.*

ἐναλίου Rb., en Bergk, *εἰναλίου* Df. de metris bl. 374. — L. *εἰνάλιοί τε κ*. K.

352 vlgg. *Χορός. ξυνευχόμεσθα τέλεα μὲν*
πόλει, τέλεα δὲ δήμῳ
τάδ' εὔγματα γενέσθαι.

εὔγματ' ἐκγενέσθαι Bergk en Df. de metris bl. 375. — L. *εὔγματ' ἂν γενέσθαι*. M.

386 vlgg. *Γυνὴ α'. προπηλακιζομένας ὁρῶσ' ὑμᾶς ὑπὸ*
Εὐριπίδου τοῦ τῆς λαχανοπωλητρίδος.

λαχανοπωλητρίας Bergk. — L. *ἡμᾶς*.

527. *Χορ. ἀλλ' ἅπαν γένοιτ' ἂν ἤδη.*

Aangh. bij Suidas op *ἀλλ' ἅπαν*. — L. *ἀλλὰ πᾶν*. C.

558 vlg. *Μνησ. ὥς τ' αὖ τὰ κρέ' ἐξ Ἀπατουρίων ταῖς μαστροποῖς διδοῦσαι*
ἔπειτα τὴν γαλῆν φαμὲν κτέ.

Vgl. vss. 555, 560 vlgg., 564. — L. *οὐδ' ὡς*. C.

569. *Μνησ. πρόσθες μόνον, κἀγώ σε νὴ τὴν Ἄρτεμιν κτέ.*

L. *πρόσιθι*. v. H.

574 vlg. Κλεισθ. Φίλαι γυναῖκες, ξυγγενεῖς τοὐμοῦ τρόπου
[ὅτι μὲν φίλος εἴμ' ὑμῖν, ἐπίδηλος ταῖς γνάθοις].

Vs. 575 moet vervallen. C.

611 vlg. Κλεισθ. ἀναίσχυντος τις εἶ.
σὺ δ' οὖν ποίει τοῦτ', ἀναμένω γὰρ ἐνθάδε.

τις wegg. Rb., πόει Bekk. — L. ἀναμενῶ. C.

643 vlg. Κλεισθ. ἀνίστασ' ὀρθός. ποῖ τὸ πέος ὠθεῖς κάτω;
Γυνὴ ε'. τοδὶ διέκυψε καὶ μάλ' εὔχρων, ὦ τάλαν.

τοδὶ δὴ ἔκυψε Rb., τοδὶ δ' ἔκυψε Bentley, τόδ', ἰδού, ἔκυψε Brunck, Bekk. — L. τῃδὶ διέκυψε. M.

710 vlgg. Γυνὴ ζ'. ἀλλ' οὖν ἥκεις ὅθεν ἥκεις,
φαύλως τ' ἀποδρὰς οὐ λέξεις,
οἷον δράσας διέδυς ἔργον,
λήψει δὲ κακόν.

Φ. ἀποδρὰς τ' ου Bergk. — L. γ' ὅθεν οὐκ ἕξει. C.

717. Μνησ. μάτην λαλεῖτε· τὴν δ' ἐγὼ οὐκ ἀφήσω.

τήνδε δ' ἐγώ Reiske. — L. τῆσδ' ἐγὼ οὐκ ἀφήσομαι. K.

767 vlg. Μνησ. κἄμ' ἐσκυλίσας ἐς τοιαυτὶ πράγματα
οὐ φαίνετ' οὔπω κτέ.

L. οὐ φαίνεταί πω. C.

887. Γυνὴ η'. κακῶς τ' ἄρ' ἐξόλοιο κἀξολεῖ [γέ τοι] κτέ.

τ' ἄρ' Rb. κακῶς ἄρ' PS. en Bergk, γ' ἔτι Bergk. — L. κακὴ κακῶς τ' ἄρ' ἐ. κ., dan moet γέ τοι vervallen. C.

910. Μνησ. ἐγὼ δὲ Μενέλεῳ σ', ὅσα γ' ἐκ τῶν ἰφύων.

ἐγὼ δὲ Μενέλεων ὅσον ἐκ Suid. op ἰφύη, voorts Μενέλαον ὅσα γ' ἐκ τῶν Ri., μενελαον omisso σ' Rb., ἀφύων Rbi., ἐγὼ δὲ Μενέλεῴ γε σ' Eurip. Hel. 564, Μενελάῳ γέ σ' ἐκ τ. ἰ. Bergk. Vgl. de interessante aanteekeningen van vele geleerden bij Invern. VIII. bl. 454 vlg., 509. — L. Μενέλεῴ γε σ' ὅσα κτέ. C.

918. Εὐριπ. σὺ τὴν ἐμὴν γυναῖκα κωλύεις ἐμὲ . . . ἄγειν;

L. κωλύσεις. C.

1026 vlgg. Μνησ. ὅδε γὰρ ὁ Σκύθης φύλαξ
πάλαι ἐφέστηκ', ὀλοόν,
ἄφιλον ἐκρέμασε κόραξι
δεῖπνον.

ἐκρέμασε Rb., κρεμάσας Bekk. volgens Hotibius, ἄφιλόν μ'

ὅς ἑ. Bergk. » Sequuntur" (na 1025) » versus corrupti sex" Df. de metris bl. 379. — L. ἐφεστηκώς. C. En ἐκρέμασέ με κ. M.

1223 vlg. Χορ. ὀρθὴν ἄνω δίωκε. ποῖ θεῖς; οὐ πάλιν
τῇδὶ διώξει; τοὔμπαλιν τρέχεις σύ γε.

Vgl. Elmsley op Acharn. 278. — L. διώξει; 'ς τοὔμπαλιν. C.

ΒΑΤΡΑΧΟΙ[3].

20 vlg. Ξανθ. ὦ τρισκακοδαίμων ἄρ' ὁ τράχηλος οὑτοσὶ,
ὅτι θλίβεται μὲν, τὸ δὲ γέλοιον οὐκ ἐρεῖ.

ἄρ' M., θλίβετε μέν Vp. — L. ἐρῶ. C.

83. Ἡρακλ. Ἀγάθων δὲ ποῦ 'στιν;
Διόν. ἀπολιπών μ' ἀποίχεται.

οἴχεται Rbid. Vb. Borgdi. B. en Suidas op Ἀγάθων (Inv.). — L. ποῦ ποτ' ἔστ'; Δ. ἀ. μ' οἴχεται. C.

104. Ἡρακλ. ἦ μὴν κόβαλά γ' ἐστὶν, ὡς καὶ σοὶ δοκεῖ.

κόβαλα Ri. Borg., κόβαλά 1. 2, κόβαλά γ' B. — L. καὶ μὴν κ. C.

151. Ἡρακλ. . . . . ἢ Μορσίμου τις ῥῆσιν ἐξεγράψατο.

Aangh. bij Suidas op ἢ Μορσίμου. — L. ῥῆσίν τιν' ἐ. C.

206 vlg. Διόν. τίνων (μέλη);
Χάρ. βατράχων, κύκνων θαυμαστά.

τινῶν R., » idque Charonti continuat" Bekk. — L. βατραχοκύκνων. v. H.

265 vlgg. Διόν. οὐδέποτε· κεκράξομαι γὰρ
κἄν [με] δῇ δι' ἡμέρας,
ἕως ἂν ὑμῶν ἐπικρατήσω τοῦ κοάξ.

δῆι Rd., με δέῃ Ri., δῇ Vd. τὸ Rb. Vb. M., κοάξ tweemaal

---

[3]) A. Ranae, e rec. G. Dindorf; Leipz., Weidm. (G. Reimer), 1824. 8°. — Rd. enz. is de Ravennas enz. volgens deze uitgaaf; omtrent Borg. en M. vergelijke men *Mnem.* I. 418 n. 4. — B. bij Inv. is Barocc. 127 in de Bodleysche bibliotheek » liber antiquus in membrana" Inv. IX. XIII., 1 en 2 zijn twee hss. te Cambridge, in één deel, n°. 3 en 15, Plutos, Wolken, Kikkers bevattende, vgl. Inv. IX. XV, en 6 een Harleysch hs., n°. 6307, met dezelfde stukken, vgl. Inv. IX. XVI; B. Borg. 1. 6 zonder nadere opgaaf is overal volgens Inv.

Vb., » Χορ. ante κεκ. 1" Inv. IX. bl. 378 b., δεῖ δι' 1. 2. δι' ἡ. B. τὸ κ. 1. 6. τοῦ κ. 2, ὑμῶν κρατήσω τὸ κ. B. — Dindorf (1824) plaatst vs. 267 achter 268. — L. κἂν δέῃ. C. — Voorts schrijve men als één vs.

κεκράξομαι γὰρ, κἂν δέῃ, δι' ἡμέρας.

Vgl. nog Meineke op Men. bl. 207, Reisig coniectt. ad Ar. p. 44, Elmsley op Eur. Med. 387.

288. Ξανθ. καὶ μὴν ὁρῶ νὴ τὸν Δία θηρίον μέγα.

Aangh. bij Suidas op Ἔμπουσα. — L. ὁρῶ γε νὴ Δία. C.

354 vlg. Ἡμιχ. εὐφημεῖν χρὴ κἀξίστασθαι τοῖς ἡμετέροισι χοροῖσιν

ὅστις ἄπειρος τοιῶνδε λόγων, ἢ γνώμῃ μὴ καθαρεύει.

γνώμην μὴ Borgdi, γνώμη μὴ Vp., καθαρεύοι Rb. M. Vp. Borg. γνώμην 1di. 6di. — μη 2. » sed gl. 6 καθαρός ἐστί". Inv. IX. 380 a., γλώσσῃ Plut. de glor. Ath. p. 348, en καθαρεύει, maar καθαρεύοι Suidas op ἐξίστασθαι; γνώμην Bdi. — L. γνώμην. C.

359. Ἡμιχ. ἢ στάσιν ἐχθρὰν μὴ καταλύει, μηδ' εὔκολός ἐστι (πολίταις.

ς

μήτε Ri., καὶ M., πολίτης M., πολίτ i. e. τησ Vp. — L. ἐχθρῶν. C.

502. Διόν. φέρε νυν, ἐγὼ τὰ στρώματ' αἴρωμαι ταδί.

αἴρομαι τάδε Rb., αἴρωμαι Vp. αἴρομαι 1di. αἴρωμαι 2. — L. ἄρωμαι. C.

531. Διόν. ὡς δοῦλος ὢν καὶ θνητὸς Ἀλκμήνης ἔσει; en

581 vlg. Ξανθ. καὶ πῶς ἂν Ἀλκμήνης ἐγὼ υἱὸς γενοίμην κτέ.

L. Ἀλκμήνης. v. H.

594 vlg. Χορ. εἰ δὲ παραληρῶν ἀλώσει καὶ βαλεῖς τι μαλθακὸν κτέ.

ει

ἀλώσει Rb., ἀλώσῃι Vbp. Bi. M. ἀλώσει 1. 2. » Ita 6. ἀλώσ ἄξιον. Primo erat ἀλῶς, sed statim mutatum" Inv. IX. 384. a., ἀλῶς U., κἀκβάλῃισ Vbp., καὶ βάλλῃς M., βαλεῖς Didot, PS., Df., βάλῃς 1. 2. » sed futur. in gl. 1" Inv. t. a. p., βάλεις Bi. — L. κἀκβαλεῖς. Bergk en C.

672 vlg. Διόν. ὀρθῶς λέγεις· ἐβουλόμην δ' ἂν τοῦτό σε πρότερον ποιῆσαι, πρὶν ἐμὲ τὰς πληγὰς λαβεῖν.

πρὶν ἐμὲ Rdi., Borgi., πρότερον νοῆσαι πρίν με Vp. — L. νοῆσαι. C.

681 vlg. Διόν. Θρῃκία χελιδὼν
ἐπὶ βάρβαρον ἑζομένη πέταλον.

L. βαρβάρου ἑ. πετάλου. v. H.

841. Αἰσχ. σὺ δή με ταῦτ', ὦ στωμυλιοσυλλεκτάδη.

σὺ δή μοι Borg., — L. δῆμε. C.

895. Χορός. καὶ μὴν ἡμεῖς ἐπιθυμοῦμεν... ἀκοῦσαι.

L. ἡμεῖς γ' ἐ. C.

1057 vlgg. Εὐριπ. τοῦτ' ἐστὶ τὸ χρηστὰ διδάσκειν.
ὃν χρὴ φράζειν ἀνθρωπείως;

ἀνθρωπίως Rb. φάσκειν 1., ἀνθρωπίνως Suidas op dit woord ἀνειά Bd. — L. χρῆν. Bergk en C.

1075. Διόν. καὶ μινθῶσαι τὸν ξύσσιτον, κἀκβὰς τινὰ λωποδυτῆσαι.

κἀκβᾶσι Rb. — L. κἀκβάντες. C.

1136. Αἰσχ. ὁρᾷς ὅτι ληρεῖς.
Διόν. ἀλλ' ὀλίγον γέ μοι μέλει.

Inv. geeft ὁ. ὅ. λ. aan Eurip., en leest γ' ἐμοί. L. ληρεῖ. v. H.

1500. Πλούτ. ἄγε δὴ χαίρων, Αἰσχύλε, χώρει
καὶ σῶζε πόλιν τὴν ἡμετέραν.

σῶιζε Vp. — L. ὑμετέραν. C.

'ΕΚΚΛΗΣΙΑΖΟΥΣΑΙ[4].

47 vlg. Γυν. α'. καί μοι δοκεῖ
κατὰ σχολὴν παρὰ τἀνδρὸς ἐξελθεῖν μόνῃ.

L. καίτοι. C.

81. Γυνὴ ζ' (ἐπιτήδειος) εἴπερ τις ἄλλος, βουκολεῖν τὸν δήμιον.

τὸ δ. Didot. — L. βαυκαλᾶν, en zoo volgens A. Hecker ook Wespen 10, Vrede 152. K.

83. Πραξαγ. ἕως ἔτ' ἐστὶν ἄστρα κατὰ τὸν οὐρανόν.

L. ἐστὶ τἄστρα. C.

4) Dit stuk staat niet in den Venetus. — Mon. (acensis) is een papierhs. uit de 15e eeuw, volgens Thiersch, bevat Plutos, Wolken, Kikkers en Ekklesiazusen, welk laatste stuk Rigler (bij Inv.) met de uitgaaf van Invernitz heeft vergeleken, vgl. Inv. IX. bll. XIV en 534 vlgg.

101. Πραξ. τίς οὐκ ἂν ἡμᾶς ἄνδρας ἡγήσαιθ' ὁρῶν;
ἡγήσεθ' Rb. — L. ὁρᾶν. C.

107. Πραξ. ἤν πως παραλαβεῖν τῆς πόλεως τὰ πράγματα κτέ.
L. τὰς ἡνίας. C.

122 vlg. Πραξαγ. ἐγὼ δὲ θεῖσα τοὺς στεφάνους περιδήσομαι
καὐτὴ μεθ' ὑμῶν κτέ.
L. τὸν στέφανον. M.

125. Γυνὴ β'. ὡς καὶ καταγέλαστον τὸ πρᾶγμα φαίνεται.
L. οὐ καταγέλαστόν σοι τ. C.

128. Πραξ. ὁ περιστίαρχος, περιφέρειν χρὴ τὴν γαλῆν.
L. χρῆν. C.

130. Πραξ. κάθιζε παριών. τίς ἀγορεύειν βούλεται;
In παριών schuilt een eigennaam. C.

156 vlg. Πραξ. μὰ τὼ θεώ, τάλαινα, ποῦ τὸν νοῦν ἔχεις;
Γυνὴ ι'. τί [δ'] ἔστιν; οὐ γὰρ δὴ πιεῖν [γ'] ᾔτησά σε.
δεῖ Mon., die ook γ' weglaat. — L. ποῖ, en πιεῖν ᾔτησά γε. C. En τί ἔστιν.

200. Πραξ. νῦν δ' εἰσὶ χρηστοί, καὶ σὺ νῦν χρηστὸς γενοῦ.
L. σύ νυν. C.

209. Πραξ. ἢν οὖν ἐμοὶ πείθησθε, σωθήσεσθ' ἔτι en

213. Γυνὴ β'. εὖ γ', εὖ γε νὴ Δί', εὖ γε· λέγε, λέγ', ὠγαθέ.
Deze regel wordt door het koor van vrouwen gesproken; Bergk verdeelt dien onder twee vrouwen. C.

227. Πραξαγ. τὸν οἶνον εὔζωρον φιλοῦσ' ὥσπερ πρὸ τοῦ.
οἶνον φιλοῦσ' εὔζωρον, ὥσπερ καὶ πρὸ τοῦ Bergk, en zoo moet gelezen worden, maar πιεῖν in plaats van οἶνον. C.

239. Πραξ. τὰ δ' ἄλλ' ἐάσω· ταῦτα κἂν πείθησθέ μοι κτέ.
πείθεσθε Mon. — L. πίθησθε. C.

273 vlgg. Πραξαγ. ἡνίκ' ἂν δέ γε
τούτους ἀκριβώσητε περιηρμοσμέναι
καὶ θαἰμάτια τἀνδρεῖά γ' ἅπερ ἐκλέψατε
ἐπαναβάλεσθε.
τ' (voor γ') en ἐπαναβάλλεσθε Rb. ἐπανεβάλλεσθε Mon. — L. ἀκριβῶς ἦτε met Dr. R. B. Hirschig en ἃ παρεκλέψατε. C.

320. Βλέπ. ἀλλ' ἐν καθαρῷ ποῦ ποῦ τις ἂν χέσας τύχοι;
L. ποῦ ποτέ τις. C.

396 vlg. Χρέμ. ἔδοξε τοῖς πρυτάνεσι περὶ σωτηρίας

γνώμας καθεῖναι τῆς πόλεως,

L. προθεῖναι. C.

420 vlg. Χρεμ. ἣν δ' ἀποκλείῃ τῇ θύρᾳ
χειμῶνος ὄντος, τρεῖς σισύρας ὀφειλέτω.

ἣν δ' Ri., ἀποκλίνῃ τῇ θύρᾳ· Rbi. Mon., maar Rb. heeft de ι adscriptum, ἐπικλίνῃ Inv., τὴν θύραν Inv. en Suid. op ἀλφιταμοίβους. — L. ἀποκλῄῃ. C.

448. Χρέμ. μόνας μόναις, οὐ μαρτύρων [γ'] ἐναντίον (συμβάλλειν). en

451. Βλεπ. νὴ τὸν Ποσειδῶ, μαρτύρων γ' ἐναντίον (ἀποστέρειν).
τ' Mon. op de tweede plaats, en zoo las men algemeen voor Reiske. Die lezing moet hersteld worden, en op de eerste plaats γ' wegvallen. C.

455. Βλέπ. τί δῆτ' ἔδοξεν;
Χρέμ. ἐπιτρέπειν γε τὴν πόλιν | ταύταις.

ἐπιτρέπειν σε τὴν πόλιν ταύταις Ri., σε Rb. Mon. — L. δεῖν. C.

458. Βλέπ. ἅπαντά τ' αὐταῖς ἐστι προστεταγμένα κτέ.

θ' αὐταῖς Mon. — L. ἅπαντ' ἄρ' αὐταῖς. C.

487 vlgg. Χορ. ...... καὶ περισκοπουμένη
* * τἀκεῖσε καὶ
τἀκ δεξιᾶς κτέ.

Er ontbreekt ‿̲ — υ —, vgl. de antistrophe, vs. 498; κἀκεῖσε Inv., die geene gaping aanneemt. — L. τἀνθένδε καὶ τἀκεῖσε κτέ. C. Veeleer τὰ δεῦρο καὶ τἀκεῖσε κτέ., vgl. Valck. op Eurip. Phoen. 266 (272) bl. 96 vlg., en Aristoph. Kikkers 1077, Vogels 1459. K.

501 vlg. Χορ. ἀλλ' ἐπείγου
ἄπασα καὶ μίσει σάκον πρὸς ταῖν γνάθοιν ἔχουσα.

L. τοῖν. C.

514. Χορ. * κεῖται δὴ πάνθ' ἅπερ εἶπας· σὸν δ' ἔργον τἄλλα διδάσκειν.

κεῖται δὴ Rbi., πάνθ' Ri., κειται δὴ Mon., ἤδη κεῖται π. Bekker. — L. κεῖται καὶ δὴ π. C.

522 vlg. Πραξαγ. οὔ τοι παρὰ [τοῦ] μοιχοῦ γε φήσεις (ἥκειν ἐμέ).
Βλέπυρ. οὐκ ἴσως
ἑνός γε.

παρά του Inv. en Ri., ἑνός » recentioris" Mon. bij Inv. IX. 536. L. οὔ τἄρα παρὰ μ., dan moet τοῦ vervallen. C.

524. Πραξαγ. εἰ τῆς κεφαλῆς ὄζω μύρου.
L. ὄζει. C.

525 vlg. Βλέπ. τί δ', οὐχὶ βινεῖται γυνὴ κἄνευ μύρου;
Πραξ. οὐ δὴ τάλαιν' ἔγωγε.
Βλέπ. πῶς οὖν ὄρθριον | ᾤχου.
οὐ δῆτα, τάλαν, ἔ. Bergk. — L. οὐχ ἡ τ., en ὀρθρία. C.

531. Βλέπ. εἰποῦσαν γέ μοι.
ἀλλ' ἔστιν ἐνταῦθά τι κακόν.
L. γ' ἐμοί met Inv. en Bekker, en ἐνταυθὶ κακόν τι. C.

540. Πραξ. ἔπειθ' ἵν' ἀλεαίνοιμι, τοῦτ' ἠμπισχόμην.
Aangh. bij Suidas op ἀλεαίνοιμι; voorts ἵνα λ. Mon. — L. ἠμπεσχόμην. C.

558 vlg. Πραξ. νὴ τὴν 'Αφροδίτην, μακαρία τἄρ' ἡ πόλις ἔσται τὸ λοιπόν.
γ' ἄρ' Inv. — L. τἄρ' ἡ π. C.

569 vlg. Πραξαγ. ἀλλ' ἀποφανῶ τοῦθ', ὥστε σέ γέ μοι μαρτυρεῖν,
καὶ τοῦτον αὐτὸν μηδὲν ἀντειπεῖν ἐμοί.
ὅστις γε μοι Mon., σε Inv. — L. σέ τέ μοι; en ἀντειπεῖν ἔτι. C.

602 vlg. Πραξαγ. τοῦτ' ἐς τὸ μέσον καταθήσει,
καὶ μὴ καταθεὶς ψευδορκήσει.
L. ἢ μὴ κ. C.

611. Βλεπ. ἢν μείρακ' ἰδὼν ἐπιθυμήσῃ καὶ βούληται σκαλαθῦραι.
L. ἐπιθυμῇ τις. v. H.

647 vlg. Πραξ. εἴ σε φιλήσειεν 'Αρίστυλλος, φάσκων αὐτοῦ (πατέρ' εἶναι.
Βλέπ. οἰμώζοι γ' ἂν καὶ κωκύοι.
αὐτοῦ Inv. — οἰμώζοι μ' ἂν Suidas op καλαμίνθη. — L. φάσκων σ' αὐτοῦ. M. En οἰμώζοι τἂν κ. C.

656. Βλέπ. πόθεν ἐκτίσει ταύτην; οὐ γὰρ τῶν κοινῶν γ' ἐστὶ (δίκαιον.
πόθεν κτίσῃ Ri., κτίσηι Rb. — L. οὐ γὰρ δὴ 'κ τῶν κοινῶν γε δίκαιον. C.

721 vlg. Πραξ. καὶ τάς γε δούλας οὐχὶ δεῖ κοσμουμένας
τὴν τῶν ἐλευθέρων ὑφαρπάζειν Κύπριν.
L. οὐκέτι. v. H.

729. 'Ανὴρ α'. προχειριοῦμαι κἀξετάσω τὴν οὐσίαν.
L. κἀξετῶ, vgl. Isocr. Euag. 195. c. — C.

733. 'Ανὴρ α'. πολλοὺς κάτω [δὴ] θυλάκους στρέψασ' ἐμούς.
στρέψασα Rb. — L. πολλοὺς περὶ κάτω θυλάκους τρέψασ' ἐμούς, dan moet δή vervallen. C.

773. Ἀνὴρ α'. λέγουσι γοῦν ἐν ταῖς ὁδοῖς.
Ἀνὴρ β'. λέξουσι γάρ.
λέξουσι Ri., λέγουσι Rb., λέγουσι γὰρ Mon. — L. ἐροῦσι. C.

812. Ἀνὴρ α'. δεινά γε λέγεις.
Ἀνὴρ β'. τί δεινόν; ὥσπερ οὐχ ὁρῶν κτἑ.
δεινά — τί δ. Mon., δεινά γ' ὦ. Inv., δεινόν γε λ. Reisig. — L. δεινὸν λ. C.

881. Γραῦς α'. παίζουσ', ὅπως ἂν περιλάβοιμ' αὐτῶν τινα παριόντα.
L. περιβάλοιμ' α. C.

969 vlg. Νεαν. καὶ ταῦτα μέντοι μετρίως πρὸς τὴν ἐμὴν ἀνάγκην εἰρημέν' ἐστίν.
L. ἔστω. C.

980. Νεάν. οὐ τὸν Σεβῖνον, ὃν σὺ προσδοκᾷς ἴσως.
τόν σε βινοῦνθ' Bekk. — L. προσεδόκας. C.

1003. Νεαν. τί δῆτα κρεάγρας τοῖς κάδοις ὠνοίμεθ' ἄν.
Eveneens Suidas op κρεάγρα, maar ὠνούμεθ' ἂν op ἐξόν, voorts ὠνήμεθ' Mon. — L. ὠνούμεθα. C.

1016 vlgg. Γραῦς β'. . . . μὴ σποδεῖν αὐτὴν, πρὶν ἂν
τὴν γραῦν προκρούσῃ πρῶτον. ἢν δὲ μὴ θέλῃ
[πρότερον προκρούειν, ἀλλ' ἐπιθυμῇ τῆς
νέας] κτἑ.
προσκρούειν Rb. — L. πρότερον. v. H. Vs. 1018 moet vervallen. M.

1037. Νεαν. ποῖ τοῦτον ἕλκεις σύ;
Γραῦς α'. τὸν ἐμαυτῆς εἰσάγω.
σύ wegg. Rb. — L. ἄνδρ' ἄγω. C.

1067. Νεαν. ἀτὰρ ἥτις εἶ γε, πόλλ' ἀγαθὰ γένοιτό σοι.
εἴτις Rb. — L. εἶ σύ. C.

1077. Γραῦς β'. ἐμοὶ γὰρ ἀκολουθεῖν σ' ἔδει κατὰ τὸν νόμον.
L. σε δεῖ. C.

1080. Νεαν. φέρε, πῶς ἐπ' ἐκείνην τὴν καλὴν ἀφίξομαι;
L. πῶς ποτ' ἐπ. ἐ., φέρε moet vervallen. C.

1101. Νεαν. Φρύνην ἔχουσαν λήκυθον πρὸς ταῖς γνάθοις.
L. τοῖν γνάθοιν. C.

1105 vlg. Νεαν. ὅμως δ' ἐάν τι πολλὰ πολλάκις πάθω
ὑπὸ ταῖνδε ταῖν κασαλβάδοιν κτἑ.
πολλὰ πολλάκις Ri., ταῖνδαι Rb. — L. τοῖνδε τοῖν. C.

1108 vlg. Νεαν. καὶ τὴν ἄνωθεν ἐπιπολῆς τοῦ σήματος
ζῶσαν καταπιττώσαντας κτέ.
καὶ τῶν Ri., τῶν Rb. — L. τήνδ' ἄ. C.
1117 vlg. Θεράπ. ἥτις μεμύρωμαι τὴν κεφαλὴν μυρώμασιν
ἀγαθοῖσιν, ὦ Ζεῦ.
μεμύρωμαι Ri., μεμύρισμαι Ath. XV. 691. — L. ἀγαθοῖσί γ', ὦ. C.
1132 vlg. Θεράπ. ὅστις πολιτῶν πλεῖον ἢ τρισμυρίων
ὄντων τὸ πλῆθος οὐ δεδείπνηκας μόνος;
L. πλεῖν ἂν ἢ τ. G.
1142. Θεράπ. καὶ τῶν κριτῶν εἰ μή τις ἑτέρωσε βλέπει.
βλέπῃ Mon. — L. μὴ 'τέρωσέ τις β. C.
1145 vlgg. Θεράπ. καὶ μὴ παραλείψεις μηδέν', ἀλλ' ἐλευθέρως
καλεῖν γέροντα, μειράκιον, παιδίσκον; ὡς
τὸ δεῖπνον αὐτοῖς ἔστ' ἐπεσκευασμένον
ἁπαξάπασιν.
L. καλεῖς, en ἐστιν ἐσκευασμένον. C.
1164 vlg. Χορ. ὦ φίλαι γυναῖκες, εἴπερ μέλλομεν τὸ χρῆμα δρᾶν,
ἐπὶ τὸ δεῖπνον ὑπανακινεῖν.
L. ὑπαποκινεῖν. C.
1175 vlg. Ἡμιχ. σὺ δὲ ταῦτ' ἀκροασάμενος
[ταχὺ καὶ] ταχέως λαβὲ τρυβλίον.
τρύβλιον Rb., τρίβλιον Mon. — ταχὺ καί moet wegvallen. v. H.

ΠΛΟΥΤΟΣ[5].

44 vlgg. Καρ. καὶ τῷ ξυναντᾷς δῆτα πρώτῳ;
Χρεμ. τουτῳί.
Καρ. εἶτ' οὐ ξυνίῃς τὴν ἐπίνοιαν τοῦ θεοῦ
φράζουσαν, ὦ σκαιότατέ σοι σαφέστατα κτέ.
τουτωΐ Ri., ξυνιεις Rb., ξυνίεις Vb. — L. κᾆτα en φράζοντος, bovendien wordt dit alles door Karion gesproken. C.
62. Χρεμ. ἐμοὶ φράσον.

---

[5]) A. C. Plutus, recogn. cet. Tiberius Hemsterhuis, Harling., V. van der Plaats, 1744, 8°. — Plutus ex rec. Porsoni et Dobraei bij Inv. IX. 1 vlgg. (PD). Omtrent Mon. en Borg. zie *Mnem.* I. 418, II. 213.

Πλοῦτ. κλάειν ἔγωγέ σοι λέγω.

κλαίειν Ri. zoo als altijd (volgens Inv.), » κλάειν an κλαίειν habeat R., ambiguum est" Bekk. — Vgl. vs. 58 en lees ἐγὼ καὶ σοὶ λ. C.

130. Χρεμ. αὐτίκα γὰρ ἄρχει διὰ τίν' ὁ Ζεὺς τῶν θεῶν;
L. διὰ τί. C.

171 vlgg. Καρ. ἐκκλησία δ' οὐχὶ διὰ τοῦτον γίγνεται;
174. ὁ Πάμφιλος δ' οὐχὶ διὰ τοῦτον κλαύσεται;
176. 'Αγύρριος δ' οὐχὶ διὰ τοῦτον πέρδεται;
δέ γε M., γίνεται Vp., 174. δὲ Rb., 176. ἀργύριος Mmn., ἀγύριος Vb., maar 'Αγύρριος Inv., waarbij C. niets aanteekent. — L. overal δέ γ' οὐ. C.

208. Χρεμ. μὴ νῦν μελέτω σοι μηδὲν κτέ.
L. μή νυν. C.

211. Πλοῦτ. πῶς οὖν δυνήσει τοῦτο δρᾶσαι θνητὸς ὤν;
οὐ pr. Rb., δυνήσῃ Vp. — L. δρᾶν σὺ θ. C.

216 vlg. Χρεμ. ἐγὼ γάρ, εὖ τοῦτ' ἴσθι, κἂν δῇ μ' ἀποθανεῖν, αὐτὸς διαπράξω ταῦτα.
» 215—217 om. pr R" Bekk., κἂν Mm. Vb. » et mg R" Bekk., κἂν δεῖ Vp., κεἰ δεῖ Bekker, PD. — L. χρῇ. C.

219. Χρεμ. ὅσοις δικαίοις οὖσιν οὐκ ἦν ἄλφιτα.
L. ἔστ' ἄ. C.

244. Πλοῦτ. γυμνὸς θύραζ' ἐξέπεσον ἐν ἀκαρεῖ χρόνῳ.
Aangh. bij Et. M. en Suidas op ἀκαρῇ; voorts ἔπεσον Mn. — L. χρόνου. C.

259 vlg. Χορ. σὺ δ' ἀξιοῖς ἴσως με θεῖν, πρὶν ταῦτα καὶ φρά(σαι μοι ὅτου χάριν μ' ὁ δεσπότης ὁ σὸς κέκληκε δεῦρο.
Vs. 260 staat zoo in Ri., χῶ M., γ' ὁ mn., χάριν γ' PD. κέκληκεν ἡμᾶς Mmn. — L. καὶ ταῦτα πρὶν φ. C.

296. Χορ. ἡμεῖς δέ γ' αὖ ζητήσομεν θρεττανελὸ τὸν Κύκλωπα.
θρεττανελῶ Mm. ζηλώσομεν Bentley — L. δέ γε. C.

335. Βλεψ. τί ἂν οὖν τὸ πρᾶγμ' εἴη; πόθεν καὶ τίνι τρόπῳ κτέ.
οὖν om. M., καὶ πόθεν Rb. Vb. Mmn. — L. πρᾶγμα καὶ π. C.

406. Βλεψ. οὔκουν ἰατρὸν εἰσαγαγεῖν ἐχρῆν τινά;
L. εἰσάγειν, volgens Vb. — C.

584. Πεν. [ἵνα τοὺς Ἕλληνας ἅπαντας ἀεὶ δι' ἔτους πέμπτου ξυναγείρει].

πάντας Vb., συναγείρει Vp., ξυναγείροι M. — Het vs. is onecht. C.

587. Χρεμ. οὐκοῦν τούτῳ δήπου δηλοῖ τιμῶν τὸν πλοῦτον ἐκεῖνος. τοῦτο Rb. Vb. Πλοῦτον PD. — L. δῆλος. C.

781. Πλοῦτ. ἄκων ἐμαυτὸν τοῖς πονηροῖς ἐνεδίδουν. L. met Vb. ἐπεδίδουν. C.

848. Χρεμ. καὶ ταῦτ' ἀναθήσων ἔφερες οὖν;
Δικ. νὴ τὸν Δία.
Voor Chremylos hier overal Karion, Vb. — L. ἄρα φέρεις; C.

1055. Νεαν. βούλει διὰ χρόνου πρός με παῖσαι;
Γραῦς. ποῖ, τάλαν;
Νεαν. αὐτοῦ, λαβοῦσα κάρυα.
παῖξαι Vb., maar παῖσαι Inv., zonder aanm. van C., λαβοῦσαν Rb. — L. ποῦ. v. H. En πρὸς ἐμὲ π.

1171. Ἱερ. τίς ἂν φράσειε ποῦ 'στι Χρεμύλος μοι σαφῶς; ἱερεὺς τοῦ διός Rb., μοι wegg. Rb., ποῦ 'ςι Inv., zonder aanmerk. van C. — L. φράσει' ὅπου 'στι. C.

BLADVULLING.

AESCHINES spreekt in zijne redevoering tegen TIMARCHUS § 25 over het standbeeld van SOLON te *Salamis*. Gij allen, zegt hij, zijt te *Salamis* geweest en hebt het beeld op de markt gezien: εὖ γὰρ οἶδ' ὅτι πάντες ἐκπεπλεύκατε εἰς Σαλαμῖνα καὶ τεθέασθε τὴν Σόλωνος εἰκόνα. Het eiland lag zeker niet ver van *Athene*, maar mogen wij aannemen, dat AESCHINES kon onderstellen dat alle *Atheners* wel eens de markt aldaar bezocht hadden? Er is bovendien iets overtolligs in de wijze van uitdrukking. Om deze zwarigheden te vermijden komt het mij wenschelijk voor eene kleine verandering te maken en te lezen: πάντες ὅσοι ἐκπεπλεύκατε εἰς Σαλαμῖνα καὶ τεθέασθε κτέ., d. i. ik geloof dat gij allen, voor zoover gij te *Salamis* geweest zijt, ook het standbeeld van SOLON gezien hebt.

Haarlem. S. A. N.